सुनील भाई की पुण्यतिथि
आदिवासी गांव, संगठन, खेती और कुछ विचार

इक्कीस अप्रैल को सुनील भाई की छठवीं पुण्यतिथि है। इस मौके पर मैं उनको केन्द्र में रखकर अपने अनुभव, स्मृतियों और विचारों को समेटने की कोशिश कर रहा हूं।

पहली बार मैं उनसे मिला था जब वे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) दिल्ली से मध्यप्रदेश के होशंगाबाद में आए थे। यह वर्ष 1985 के आसपास की बात है। इटारसी के राजनारायण और सुनील भाई दोनों ही होशंगाबाद जिले के आदिवासी बहुल केसला विकासखंड के बांसलाखेड़ा गांव में रहते थे। राजनारायण भाई का परिवार भी वहीं रहता था। उनके माता पिता भी साथ थे।

इस मुलाकात में सुनील भाई ने मुझसे कहा- बाबा, हम लोग पानी की समस्या को लेकर एक पदयात्रा निकालने का सोच रहे हैं, तुम आ जाओ, थोड़ी मदद होगी। मैंने कहा-ठीक है सुनील भाई। मई का महीना था, मैं केसला पहुंच गया। पहुंचा तो शाम हो चुकी थी, पता करने पर मालूम हुआ। सुनील भाई जहां रहते हैं, वह जंगल के बीच में है। मैं सड़क पर सहेली गांव स्थित ढाबे पर ही रात रूका।

सुबह मैं पूछते पाछते बांसलाखेड़ा पहुंचा। रास्ते में जंगल और नदी कल कल बहती हुई। सूर्य की किरणों से पानी चमक रहा था। चिड़िया चहचहा रही थी। बहुत ही रमणीक दृश्य था। नदी पार बांसलाखेड़ा पहुंचा। यह कोई बड़ा गांव नहीं था। कुछ आदिवासियों के कुछ टप्पर थे घास फूस के। इसके बाद में करीब महीने भर रहा। राजनारायण, सुनील भाई, केसला के नंदू दादा (नंदकिशोर जायसवाल) और मैं कई गांव घूमे।

छोटे छोटे गांव थे। दूर दूर घर। इलाके में पानी की समस्या थी। गेरू से दीवार लेखन करते और पांव-पांव एक गांव से दूसरे गांव घूमते, लोगों से मिलते और बात करते। गांववालों के साथ मिलकर पानी लाओ संघर्ष मोर्चा बनाया गया। केसला से होशंगाबाद तक पैदल जुलूस निकाला गया। इसमें करीब सौ लोग होंगे। लेकिन जोश काफी था। वर्ष 1985 में ही आदिवासियों,ग्रामीणों व किसानों के साथ मिलकर किसान आदिवासी संगठन का गठन कर लिया गया था।

होशंगाबाद जिले का यह इलाका आदिवासी बहुल है। गोंड और कोरकू आदिवासी यहां के बाशिन्दे हैं। यह पूरा इलाका विस्थापितों का ही जिला है। तवा बांध, प्रूफ रेंज और सतपुड़ा टाइगर रिजर्व से कई गांवों को उजड़ना पड़ा है। यानी इस इलाके में पानी की समस्या तो थी ही, विस्थापितों की आजीविका की समस्या भी थी। इसके अलावा वनविभाग व पुलिस की ज्यादतियां थीं और मजदूरी के भुगतान में लेटलतीफी एक समस्या थी। किसान आदिवासी संगठन ने इन सब मुद्दों को जोर शोर से उठाया। अधिकार और हक के लिए लड़ने का संगठन का तरीका था- पदयात्रा, धरना, प्रदर्शन और सत्याग्रह। गांधी का रास्ता। इस इलाके में आदिवासियों ने कई बार पदयात्राएं की और सत्याग्रह भी किए। कई कार्यकर्ता और उनके नेता सुनील भाई और राजनारायण जेल गए।

संगठन का कोई तामझाम व कार्यालय नहीं था। बाद में राजनारायण की स्मृति में केसला में किसान आदिवासी संगठन का कार्यालय बना। केसला, सुखतवा के साप्ताहिक बाजारों में सुनील भाई और उनके साथियों को पर्चे बांटते देखा जा सकता था। सुनील भाई इन बाजारों में आदिवासियों की समस्याएं सुनते थे और संगठन के माध्यम से उनका क्या हल हो सकता है, सुझाते थे।

86 में जब इलाके में सूखा पड़ा था तब यहां के आदिवासी भौरा (बैतूल जिला) से भोपाल पैदल गए थे। कई बार आदिवासियों की मजदूरी का भुगतान जो महीनों लटक जाता था, जुलूस निकालकर तत्काल भुगतान करवाया गया। संगठन को बड़ा झटका तब लगा जब राजनारायण की एक सड़क हादसे में मौत हुई। यह 26

अप्रैल 1990 को राजनारायण का निधन हो गया। लेकिन संगठन में नए कार्यकर्ताओं ने इस खालीपन को भरा और संगठन को मजबूत किया। फागराम, रावल, गुलिया बाई, विस्तोरी, शांति बाई ने सुनील भाई व ग्रामीणों के साथ मिलकर संगठन को नए तेवर दिए। सुनील भाई की पत्नी स्मिता जी का इस पूरे काम में बराबर का योगदान रहा है। आज वे संगठन की मार्गदर्शक हैं। सुनील भाई कहते थे - अगर संगठन मजबूत होगा तो दुनिया की कोई ताकत गरीबों के हक व अधिकार नहीं छीन सकती।

वर्ष 1996 में तवा नदी में मछली का अधिकार मिला और यहां सरकारीकरण और निजीकरण से अलहदा सहकारीकरण का अच्छा, सफल और अनूठा प्रयोग हुआ। लेकिन जब यह मछली का अधिकार ले लिया गया तब इस इलाके के आदिवासियों व ग्रामीणों ने सद्बुद्धि सत्याग्रह चलाया था, जिसकी व्यापक चर्चा हुई थी। तो सुनील भाई ने एक तरफ अन्याय के खिलाफ सत्याग्रह को लड़ने का हथियार बनाया, वहीं दूसरी तरफ उनका जीवन सादगीपूर्ण, सरल और श्रम आधारित था।

सुनील भाई, समाजवादी विचारक किशन पटनायक और समाजवादी विचारों से प्रभावित थे। इनका उनके जीवन को दिशा देने में बड़ा योगदान है। वे अपनी पढ़ाई छोड़कर, होशंगाबाद जिले को कर्मस्थली बनाकर समाजवादी आंदोलन में शामिल हो गए थे। किशन पटनायक द्वारा राजनैतिक दल समाजवादी जनपरिषद के पदाधिकारी तो थे, समाजवादी विचारों को नई धार देने में भी सुनील भाई का योगदान है।

लेकिन यहां मैं उनके रचनात्मक व उत्पादक कामों की चर्चा करना चाहूंगा। सुनील भाई, मध्यवर्गीय युवा थे, जेएनयू से अर्थशास्त्र में एम. ए. किया था। लेकिन उन्होंने 30 सालों तक एक आदिवासी गांव में बहुत ही साधारण जीवनशैली में जीवन व्यतीत किया। एक साधारण ग्रामीण की तरह जीवन जिया। सुबह-शाम उनके घर पर गांव के कई साथी जुटते थे- मनीराम, बिहारी, छोटेराम, जुगन दादा और शांति बाई, बतीबाई, फूलाबाई। यह सभी उसी भुमकापुरा गांव के थे जहां

सुनील भाई रहते थे। बाद में फागराम जुड़े और कई बार जनपद, जिला व विधानसभा चुनाव भी लड़ा। जनपद और जिला पंचायत में निर्वाचित भी हुए। अभी भी जनपद सदस्य हैं।

कई बार मैंने उन्हें गांव के लोगों के साथ मिलकर खाना खाते देखा था। जब लम्बे आंदोलन चलते थे तो गांव के लोग घर से मक्के की रोटी, महुआ का भुरका, भुना चून (आटा), मिर्ची की चटनी और कांदा (प्याज) लाते थे। सुनील भाई गांववालों के साथ ही खाना खाते थे, चाहे वह दो-दिन का बासा भी हो। उन्होंने एक सादगी व आदर्शपूर्ण जीवन जिया। सुनील भाई के ठोस विचार केसला की ठोस जमीन, गहरी खोज और अनुभव से निकले थे। वे लगातार इस नजरिये से लिखते रहे हैं। विचार शून्य में नहीं बनते जीवन की स्थितियों का इसमें योगदान होता है।

वे खुद कपड़े धोते थे, झाड़ू लगाते थे, खाना बनाते थे, लकड़ी काटते थे। यहां तक कि शुरूआती दिनों में उन्होंने हल भी चलाया है। उनके पास न कोई गाड़ी थी और न ही घर में कोई तामझाम। न इंटरनेट और न ही टीवी। एक रेडियो जरूर था। उनकी पढ़ाई लिखाई दहलान पर बैठकर होती थी, कोई व्यवस्थित टेबल कुर्सी नहीं थी। ट्रेन में, बस में, रेलवे स्टेशन पर वे लगातार साथियों को पोस्टकार्ड लिखा करते थे। सुनील भाई की देश दुनिया के घटनाक्रमों पर पैनी नजर होती थी और वे उन पर लगातार टिप्पणियां व लेख लिखते रहते थे।

उन्होंने घर की बाड़ी में पूरी तरह बिना रासायनिक खेती की, जिसे उनके घर की सदस्य की तरह शांति बाई करती हैं। उनके घर में आम, कटहल, अमरूद, केला, जामुन, मीठी नीम के पेड़ हैं। बरसात में हरी सब्जियां लगाई जाती हैं जैसे सेम, बैंगन, मूली, मैथी, पालक और टमाटर। यह वैकल्पिक खेती आज की जरूरत है।

कुल मिलाकर सुनील भाई का वैकल्पिक जीवनशैली व जीवन मूल्यों से भरा था। उनकी जीवन में सादगी, सरलता और श्रम आधारित जीवनशैली थी। वे समाजवाद के सिद्धांतकार थे जिसमें सादगी और बराबरी विशेष तत्व हैं। अगर सादगी रहेगी

तभी बराबरी हो सकती है, सुनील भाई का जीवन इसकी प्रेरणा देता है। उन्होंने संगठन और गांधी के सत्याग्रह को लड़ने का अधिकार बनाया और गांधी को जिया भी।